ग्रन्थमाला 'बालसंस्कार' : खण्ड ५

अध्ययन कैसे करें ?

(विफलताके कारणों एवं उपायों सहित)

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सहायक

श्री. राजेंद्र महादेव पावसकर

(भूतपूर्व अध्यापक, माध्यमिक विद्यामंदिर, सांताक्रूज (पू.), मुंबई.)

सनातन संस्था

卐 **सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या** 卐

मराठी ३४५, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ५३, तमिल ४४, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

जुलाई २०२४ तक ३६६ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९७ लाख २९ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

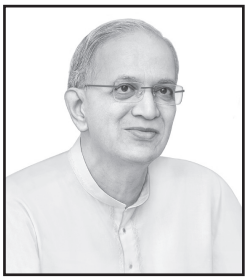

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधना मार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.७.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य) की स्थापनाका उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसारार्थ 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स की संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्री (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षण फलक आदि) के लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपर लेखन भी करते हैं ।

प्रस्तुत ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(अध्यायोंके विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)

अध्याय १ : विद्यार्थियोंका मार्गदर्शन !

१. विद्यार्थियो, अध्ययन क्यों करना चाहिए ? १०

२. अच्छे अध्ययनके लिए अपना आत्मविश्वास बढाएं ! १२

३. अध्ययन कैसे करें ? १२

३ अ. विद्यालयके पहले दिनसे ही अध्ययन आरम्भ करें १२

३ आ. प्रत्येक विषयमें रुचि लेते हुए एवं मन लगाकर पढें १२

३ इ. अध्ययनकी उचित समय-सारणी बनाएं ! १३

३ ई. यथासम्भव सवेरे अध्ययन करें १४

३ उ. अध्ययनके पूर्व यह करें ! १४

४. परीक्षाका सहजतासे सामना कैसे करें ? २०

४ अ. परीक्षाका भय अथवा चिन्ता मनसे कैसे दूर करें ? २०

५. विद्यार्थियो, ऐसे पापसदृश्य कृत्य न करो ! ३०

५ अ. 'कॉपी' (नकल) न करें ! ३०

६. परीक्षामें मिली असफलताके कारणोंपर उपाय खोजें ! ३१

६ आ २. एकाग्रता बढानेके उपाय ३४

६ इ २. स्मरणशक्ति बढानेके उपाय ४२

७. परीक्षामें विफल अथवा निराश होनेपर आत्महत्याका विचार करना मूर्खता है ! ४४

८. बच्चो, अध्ययनके साथ प्रतिदिन साधना भी करो ! ४७

अध्याय २ : अभिभावकोंसे हितकर संवाद !

१. अभिभावको, बच्चोंकी अध्ययनके प्रति रुचि होनेमें आपका भी सहयोग बहुमूल्य ! ५०

२. अभिभावक अपनी अपेक्षाओंका बोझ बच्चोंपर न डालें ! ५४

३. अपने बच्चोंको 'परीक्षार्थी' नहीं, 'आदर्श विद्यार्थी' बनाएं ! ५५

४. अभिभावको, सम्मोहन-उपचारका महत्त्व समझकर बच्चोंके हितमें उसका उपयोग करें ! ५६

४ ए. सम्मोहनशास्त्रके उपयोगसे परीक्षाका भय दूर होना ६०

५. बच्चोंकी अनसुलझी समस्याओंके समाधान हेतु उन्हें सम्मोहन-उपचार अथवा मनोरोग-चिकित्सा विशेषज्ञके पास ले जाएं ! ६१

६. अभिभावको, साधना ही सभी समस्याओंका समाधान ! ६१

६ अ. बच्चोंमें बचपनसे ही साधनामें रुचि क्यों उत्पन्न करें ? ६१

६ आ. अभिभावको, शासनसे शिक्षामें साधनाका विषय समाविष्ट करनेका आग्रह करें ! ६२

६ इ. बच्चोंको साधनामें प्रवृत्त करने हेतु सनातन संस्थाद्वारा किए जा रहे प्रयास ६३

卐 प्रस्तुत ग्रन्थकी असामान्यता समझ लें ! ६४

卐 संकलनकर्ताओंका वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं अन्य जानकारी ७१

अभिभावको,
'संस्कार' ग्रन्थमालारूपी भेंट स्वीकार करें ।
बालकके विषयमें आपकी सर्व चिन्ताओंको दूर हटाएं ॥

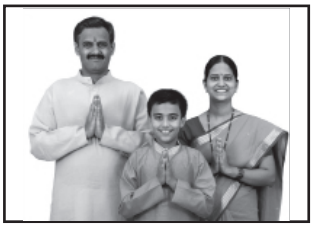

कुम्हार 'मिट्टीके गोले'को जैसा आकार देता है, उसी आकारका मटका बनता है । आकार अच्छा दिया, तो ही मटका अच्छा बनता है। एक बार मटका बन जानेके पश्चात उसका आकार परिवर्तित नहीं कर सकते । अभिभावको, आपकी सन्तानके विषयमें भी ठीक ऐसा ही होता है । बच्चे बडे होनेपर अच्छे संस्कार करना कठिन होता है; परन्तु बचपनमें मन संस्कारक्षम होता है । इसलिए उनपर अच्छे संस्कार करना सरल होता है ।

अभिभावकोंकी यह समस्या रहती है कि अपनी चाकरी-व्यवसाय, दिनभरकी भागदौड आदिसे समय निकालकर तथा दूरदर्शन, क्रिकेट जैसे आकर्षणोंसे बालकको दूर रख उसपर अच्छे संस्कार कैसे करें । इस समस्याका समाधान है सनातनकी बच्चोंके लिए प्रकाशित 'संस्कार' ग्रन्थमाला ! अभिभावको, यह ग्रन्थमाला आपके बच्चोंका भावी जीवन सुसंस्कारी, आदर्श एवं आनंदमय बनानेवाली अनमोल धरोहर है ।

अभिभावक ही बालकके वास्तविक मार्गदर्शक बन सकते हैं । बालक के मनकी सिद्धता कर उसमें सुसंस्कारोंके बीज बोनेका कार्य प्रकृतिने ही अभिभावकोंको सौंपा है । 'संस्कार'मालाके प्रत्येक ग्रन्थका एक-एक सूत्र सुसंस्कारोंका बीज है । इस हेतु अभिभावको, यह ग्रन्थमाला बालकको पढनेके लिए दें । ग्रन्थके सूत्रोंपर बालकके साथ चर्चा करें । समय-समयपर उसे एक-एक ग्रन्थ पुनः पढनेके लिए कहें । ग्रन्थमें बताए कृत्य उससे प्रत्यक्ष करवा लें । बालक अनुकरणप्रिय होते हैं; इसलिए यह प्रेमपूर्वक विनती है कि अपने आचार-विचार सदा आदर्श ही रखें ! – **संकलनकर्ता**